I J R S S I S, Issue (IX), Vol. (I), May 2023: 180-185
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 517X
Original Article

Reg. No. : MH-NGP/0000167

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES

© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

आधुनिक हिन्दी साहित्य में मानव मूल्य

रविंद्रनाथ माधव पाटील
डॉ. खत्री महाविद्यालय तुकूम चंद्रपुर, गोंडवाना विद्यापिठ गडचिरोली
*Corresponding Author :- ravindranathpatil@gmail

Communicated : 25.01.2023 | Revision : 02.03.2023 Accepted : 30.03.2023 | Published : 30.05.2023

सारांश :

आधुनिक युग में हिन्दी साहित्य अनेक रूपों में, अनेक विधाओं में हमें इच्छित स्थान पर सहजता से उपलब्ध होता है। लेखक पाठक व अन्य अपनी–अपनी तरह से अपने हित व उददेश्यों के लिए साहित्य का उपयोग करते है। मानव अपनी विशेषताओं से मास्तिष्क, हृदय और भावना से युक्त, भाषायी शक्ति से युक्त अपनी सहजात वृत्तियों के अलावा कुछ खास गुणों से संपन्न है। जिसे वह अपने जीवन संघर्ष में विवेकबुदधी का उपयोग करते हुए ग्रहणशील और वर्जणशील बातों पर ध्यान केंद्रीत करके अपने वर्तन का निर्णायक स्वयं होता है। हिन्दी साहित्य में साहित्यकारोंने अपने व्यक्तिगत हित और प्रयोजनों को सुरक्षित रखकर मानविय मूल्यों को महत्व दिया है। जिसे पाश्चात्य विद्वान निकोलाई हर्टमेन ने अपने इथिक्स ग्रंथ के व्दितिय खंड में उधृत किया हैं। जो १. जीवन, २. चेतना, ३. सक्रियता, ४. दु:ख बोध, ५. शक्ति, ६, वरण की स्वतंत्रता, ७. अंतर्दृष्टि, ८.उददेश्य बतलाए गये है। १ जिसका चित्रण आधुनिक हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में मानव मूल्यों के रूप में किया गया है। साथ ही लिखित अलिखित साहित्य, धर्म, संस्कृति और आधुनिक युग में भारतीय संविधान आदि के नीति नियम भी मानव जीवन मूल्यों के रूप में अपनाता है।

मुख्यशब्द : साहित्य, जीवन मूल्य, धर्म, संस्कृति, विज्ञान, प्रकृति, सर्वांगिण हित। .

प्रस्तांवना :

सृष्टि का सफर अनंत काल से निरंतर चल रहा है। जिसमे मानव अन्य प्राणियों की तुलना में अपनी ज्ञानेंद्रिय की ज्ञानात्मक एवं शरीर की शारीरिक क्षमता के कारण अपनी मानवीय वृत्तियों का निरंतर परिष्कार एवं उर्ध्वीकरण करते आ रहा है। मानव का इतिहास उसकी निरंतर चलने वाली बौद्धिक एवं शारीरिक क्रियाशीलता, व्यक्तिगत, चारित्रिक उपलब्धियॉ आदि है जो मानव मूल्य ही है। मानविय जीवन मूल्य का अतुलनिय महत्व है। मानव मूल्य मनुष्यता के निर्णायक जीवन मूल्यों को ही कहना चाहिए। क्योंकि मानव मूल्य मानव के लिए, उसके आनेवाली पीढि के लिए वर्तमान में और भविष्य संवारने के लिए उपयोगी है। मानव मूल्य मानव के साथ ही मानविय पंर्यावरण, धरती का पर्यावरण, प्रकृति और ब्रम्हांड के लिए भी उपयोगी, स्वास्थ्यवर्धक और हितकारक है।

मानव प्रवृत्ति व मनोवृत्तियों के संबंध में प्राचीन एवं आधुनिक विद्वानों ने, मनोवैज्ञानिको ने, साहित्यकारों ने व्यापक अध्ययन, लेखन, चित्रण, मनन–चिंतन किया है। यह अध्ययन आज भी साहित्य, अध्यात्म, विज्ञान, तंत्र आदि व्दारा लगातार उपयोग में लाये जा रहे है। जिसमें प्रमूखता से मानव जीवन, चेतना, क्रियात्मकता, सुख–दु:ख बोध, मानवीय शक्ति केंद्र, अच्छा–बूरा सोचने समझने व करने की स्वतंत्रता, अंर्तदृष्टि या आत्मबोध, सद् सद् विवेक बुद्धि, जीवन प्रयोजन आदि को मानव मूल्य के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। जिसे आधुनिक हिन्दी साहित्यकारोंने अपने साहित्य में गद्य–पद्य और अनेक विधाओं द्वारा चित्रित किया है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य

आधुनिक हिन्दी साहित्य में हम देखते है कि मानव–मूल्य एवं मानविय गुणों का साहित्य की अनेक विधाओं में अनेक रूपों में निरंतर चित्रण किया जा रहा है। जो लोकमंगल एवं मानव विकास की अदम्य भावना आदि साहित्य में चित्रित पात्रों के शब्दों व्दारा, लेखक के विचारों द्वारा, दिशा निर्देश एवं संदेश आदि द्वारा उल्लेखित

किया जाता है। व्यक्ति, उसका परिवार, समाज, राष्ट्र, परिवेश, व्यक्ति का पर्यावरण, प्राकृतिक पर्यावरण, प्रकृति, ब्रम्हांड, आदि का हित एवं सर्वांगिण विकास के अर्थो में संमम्मिलित किया जा सकता है। जिससे मानव को ज्ञान प्राप्त हो, मानव में सुधार हो, मानव कल्याण हो ऐसे साहित्यिक कार्य की सार्थकता, साक्षात्कार, क्रियान्वयन और अनुकरणिय आदर्श परिणाम ही मानव मूल्य है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल आचार्य रामचंद्र शुक्लने सन १८४३ से आज तक की समयावधि में निर्धारित किया है। जिसमें भारतेन्दु हरीश्चंद्र युग, महाविर प्रसार व्दिवेदी युग, प्रेमचंद युग, छायावादी युग, प्रगतिशील युग, उत्तर आधुनिक युग आदि में विभाजित किया है। हिन्दी साहित्य कभी केवल पद्य रूप में ही लिखा जाता रहा था उसे पद्य और अधिकतर गद्य में जनता की भाषा में, जनता व्दारा, जनता का जीवन, घटीत घटना, कार्य, विचार, परिवेश, उपयोगिता आदि संबंधी साहित्य की अनेक विधाओं में लिखा जाने लगा। हिंन्दी भाषा जो भारत के सभी निवासी अधिकतर बोल सकते है। समझ सकते है, सभी व्यवहार में ला सकते है। ऐसी भाषा को स्वतंत्रता के बाद देश ने राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में स्वीकारा, अपने समग्र व्यवहार में अपनाया। उसी हिन्दी भाषा के साहित्य में मानव मूल्यों को लोकोपयोगी रूप में सर्वसमाज में प्रसारित करने का बहुमूल्य कार्य आधुनिक हिन्दी साहित्य ने किया है।

मानव सर्वांगिण हित का स्वीकार Accept

आधुनिक युग में हिन्दी साहित्य ने सभी क्षेत्रों में मानव मूल्यों को सर्वांगिण हित के लिए अति महत्वपूर्ण समझा और स्वीकारा। मानव मूल्य कला, संस्कृति, धर्म, राजनीति, अर्थशास्त्र, ज्ञान–विज्ञान, तंत्र–यंत्र आदि जो मानव निर्मित है सबमें घूल–मिल गये है। साथ ही जब तक इनका समूचित सर्वापयोगी वापर, कियान्वयन, भारतीय संविधान, कानून, न्याय व्यवस्था, प्रशासन, मिडिया, उद्योग, व्यापार, परिवेश, पर्यावरण, ज्ञान–विज्ञान आदि द्वारां मानव जीवन में मानव परिवेश, पर्यावरण व प्रकृति के पोषण, संवर्धन विकास व हित के लिए ना हो तब तक मानव का, राष्ट्र का सर्वांगिण विकास संभव नहीं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में मानविय मूल्य

आधुनिक हिन्दी साहित्य में मानव समाज का सर्वांगिण चित्रण हुआ हैं । जो समाज में घटित होता है, हो चुका है, हो सकता है वह साहित्य में चित्रित होकर यथार्थ और आदर्श, के रूप में मान्यता प्राप्त, अनुकरणिय होता है। इसिलिए साहित्य मानव सभ्यता की अबतक की सर्वोत्कृष्ट खोज है। प्रेमचंदजी के शब्दों में साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य मानव के मनो भावात्मक संसार को प्रकट करता है। उसका पोषण, संवर्धन, परिष्कार, बूरी बातों का दलन आदि करता है। साहित्य मानव को जागृत करता है। मानव मूल्य मानव को व्यक्ति से उपर उठाकर समष्ठि से जोडता है। मानव मानव में सामंजस्यता की, मानवियता की, मानविय मूल्यों की संस्थापना करता है। मानव मूल्य साहित्य रूपी वाहन में सफर करके मानव को उद्देश्य रूपी मंजिल पर पहुचाने के लिए निरंतर क्रियान्वित रखता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य अपनी अनेक विधाओ व्दारा, उसके तत्व, विशेषताओं व्दारा मानविय मूल्यों की प्रस्थापना के लिए निरंतर क्रियाशील है। आधुनिक हिन्दी साहित्य मानविय जीवन मूल्यों से लबालब भरा हुआ है।

मानव जीवन और मानव मूल्य

मानव जीवन, मानव मूल्य, मानव की मानवता आदि प्रकृति में सर्वोपरी है। मानव प्रकृतिक रूप से अनेक प्रकार के भावों से भरां है। अपने भावों को प्रकट करने के लिए कभी कभी शब्दों की कमी महसून होती है। हिन्दी साहित्य

में यह प्रयास बखुबी किया गया है। ''प्रेमचंद की गोदान का होरी कदम बढाए चला जाता था। पगडण्डी के दोनों और उुख के पौधों की लहराती हुई हरियाली देखकर उसने मन में कहा—भगवानृ कहीं गौं से बरखा कर दें और डांडी भी सुभीते से रहें, तो एक गाय जरूर लेगा। देशी गाये ंतो न दूध दें, न उनके बछुवे ही किसी काम के हों। बहुत हुआ तो तेली के कोल्हू में चलें। नहीं, वह परछाई गाय लेगा। उसकी खूब सेवा करेगा। कुछ नही ंतो चांर—पांच सेर दूध होगा। गोबर दूध के लिए तरस—तरसकर रह जाता है। इस उमिर में न खाया—पिया तो फिर कब खाएगा। साल—भर भी दूध पी ले, तो देखने लायक हो जाय। बछवे भी अच्छे बैल निकलेंगे। दो सौ से कम की गाई न होगी। फिर, गउु से ही तो द्वार की शोभा है। सबेरे—सबेरे गउु के दर्शन हो जाएं तो क्या कहनां। न जाने कब यह साध पूरी होगी, कब वह शुभ दिन आएगा।''२ उसी प्रकार सुभद्राकुमारी चौहाण का जीवन 'मेरा जीवन' कविता में जीवन खुशी से भरा हुआ है जिसमें उत्साह, उमंग, विश्वास निरंतर भरा हुआ रहता है, जो उनके जीवन के साथी है। महादेवी वर्मा की 'बदली' में उनका जीवन दु:ख से परिपूर्ण है। मैथिलिशरण गुप्त ने 'सखी वे मुझसे कहकर जाते' कविता में यशोधरा के मन की व्यथा को उजागर किया है। मानव मूल्य ही है जो इन्हें हर विपरित परिस्थिति में भी सार्थक मानव सिद्ध करते है।

जिजीविशा Educalingo

जिजीविशा जीवन शक्ति है। जो मानव को जीवित रखती है। जीने की प्रेरणा देती है। उसी प्रकार की जीवनी शक्ति मानव के लिए लिखित—अलिचिाति साहित्य है। ''कविता के बाह्य एवं अंतरंग रूपों में युगानुरूप जो नए—नए प्रयोग नित्य—प्रति होते रहते है, वे हिन्दी कविता की जीवनी—शक्ति एवं स्फूर्ति के परिचायक है।''३ जो शारिरीक, बौद्धिक रूप में हर प्राणी में दिखाई देती हैं। साहित्य में चित्रीत मानव मूल्य जीवन संघर्ष, त्याग, वियोग, दु:ख, यातनाएं आदि का सृजन करते हुए मानव को विषम परिस्थितियों से जूझने का हौसला प्रदान करते है। जैसे गोदान का होरी, धनिया, जीवनभर, अंतिम समय तक संघर्षरत रहते है। ईदगाह कहानी का हामिद, बूढि दादी आदि आंतरिक संघर्ष करते हुए भी मानविय मूल्यों की रक्षा करते है। आधुनिक हिन्दी साहित्य मानव में मानविय मूल्य बरकरार रखने का निरंतर प्रयास करते रहता है। मनुष्य में जिजिविशा शक्ति का निर्माण करता है, सौदर्यबोध, सुख—दु:ख, आदि भावों का, मानव मूल्यों का साक्षात्कार कराता है। मानव की जीजिविषा शक्ति को निरंतर जागृत रखता है। उसे कभी हारनें नहीं देता।

चेतना Consciousness

आधुनिक हिन्दी साहित्य में मानव सभ्यता, मानव जीवन, मानव विकास आदि का मानविय दृष्टि से चित्रण हुआ है। आधुनिक युग में काव्य, गीतिकाव्य, खण्डकाव्य, महाकाव्य आदि में यह प्रयोग हुआ है। जैसे कामायनी, यशोधरा, साकेत, प्रियप्रवास, कुछ भ्रमरगित आदि में। जिसमें अनेक समस्याओं, मनाभावों का चित्रण भी दिखाई देता है। उपल्यास साहित्य में '' सेवासदन'की मुख्य समस्या भारतीय नारी की पराधीनता है। प्रेमचंद ने किसी तरह तमाम पुरानी सांस्कृतिक परंम्पराओ को तोडतें हुए वर्तमान समाज में नारी की पराधीनता को अपने निठूर और वीभत्स रूप में चित्रित किया है, इसपर सहसा विश्वास नहीं होता। हमारे साहित्य में कितने नाटक, कितने उपन्यास नारी के आत्म—बलिदान, उसके सतीत्व, उसकी पति सेवा पर नहीं लिखे गए? लेकिन कितने लेखकोंने उसकी निस्सहायता, पराधीनता, उसके साथ पशुओं और दासों—जैसे व्यवहार पर नजर डाली है।'' ४ चेतना मानव प्राणी का जीवन है। सहजात गुण है। जिसे जीवन कहा जा सकता है। जो शारीरिक और मानसिक अस्तित्व और मानसिक प्रवृत्ति

दोनों दर्शाती हैं। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज, संत गाडगे बाबा के भजन साहित्य जिसमें मानव, मानवता, शरीर, मन, बुद्धि और परिसर की स्वच्छता, स्वास्थ्य, पर्यावरण रक्षण आदि व्दारा मानविय मूल्य बोध को दर्शाती हैं। जैसे मानव 'मानव' का मित्र बने भजन में दिया गया संदेश। संतो व्दारा मानव समाज उत्थान, सुधार, परिवर्तन, वास्तविक परिस्थितियों व्दारा समाज में फैली कुरितीयों का चित्रण ताकि मानव वास्तविकता से तूलना करके कुछ बोध ले सकें। मानविय मूल्य को सकझ सके।

निरंतर कर्मरत

मानव की जन्मजात प्रवृत्ति क्रियात्मकता है। विचारों को कार्य में प्रकट करने की अदम्य क्षमता जो सभी प्रकार का प्रेम, पवित्रता, विश्वास, मान–सम्मान, समझ, सहनशीलता, त्याग, परोपकार, सुख:दु:ख आदि भावों में संम्मिलित है। एक–दूसरें को सहायता करने की, दिलासा देने की प्रवृत्ति, जन्म से मृत्यु तक क्रियाशील रहने की प्रवृत्ति यह सब मानव के मानविय मूल्य ही तो है, जिसे हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं व्दारा हिन्दी साहित्य में चित्रित किया गया है। जैसे बाबू गुलाबराय का लोकोपयोगी लेख 'मधुर भाषण' में मधुर वार्तालाप का महत्व बतलाकर कथनी और करनी में सांमजस्य, मनुष्य के असली परिचायक उसकें कर्म होते है आदि विचार। रामधारीसिंह दिनकर के 'नेता नहीं नागरिक चाहिए' इस लेख में नेता से अधिक अच्छे नागरिकों की देश को आवश्यकता है। अच्छे नागरिकों की क्रियाशीलता ही देश की सच्ची शक्ति है। समाज का असली सुधार उसमें रहनेवाले व्यक्ति का सुधार है।

बोध Perception

सुख दु:ख का अहसास मानविय चरित्र की संवेदनशीलता को व्यक्त करता है। जिसके अभाव में मानव एक–दूसरें को समझ नहीं सकता। मैथिलिशरण गुप्त के महाकाव्य में उपेक्षित नारियों का चित्रण व्दारा 'साकेत' में, उर्मिला की मनोव्यथा, 'यशोधरा' महाकाव्य मे यशोधरा की मनोव्यथा, 'दोनों और प्रेम पलता है ' कविता में दीपक और पतंगा के प्रतिक के रूप में प्रेमी और प्रमिका की मनोव्यथा, एक दूसरे के लिए सबकुछ समर्पण करना, इच्छाओं का त्याग करना, मरने मिटने के लिए तैयार रहना, प्रेम के सच्चे और निस्वार्थ रूप का चित्रण मानविय मूल्य ही तो है। हास्य–व्यंग्य व्दारा मानव मूल्यों की स्थापना हरिशंकर परसाई, शदर जोशी आदि साहित्यकारों ने की है।

त्रासदी Tragedy

आधुनिक हिन्दी साहित्य में समाज की वास्तविकता का चित्रण हुआ है। जिसमें मानव, परिवार, समाज और मानव समाज की सभी व्यवस्थाओ में फैले अनाचार, अव्यवस्था आदि है। अनेक संकंटो में सब सहकर भी मानविय मूल्य को अबाधित रखने का मानव का निरंतर प्रयास ही त्रासदी है। आजादी के बाद दबे–कुचले, लाचार समाज व्यवस्था से प्रताडित लेखको ने अपनी आत्मकथाओं, कहानी, कविता आदि व्दारा भारतीय समाज में फैली वर्ग और वर्ण व्यवस्था का नग्न चित्रण किया। जिसे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में दलित साहित्य कहकर पुकारा गया। जिसमें उन लेखकों का भोगा हुआ यथार्थ था। जो सदियों से भारत के आधे से भी अधिक आबादी भूगत रही थी। जिसे साहित्यिक क्षेत्र से अछुता रखा गया। जिसमें इनके मानव मूल्य, अधिकारों जो एक मानव के रूप में इन्हें जन्मजात प्राप्त थे। जिसे तथाकथित समाज व्यवस्था ने इनसे जबरन छिन लिए थे। उसी मानव मूल्यों की बात दलित साहित्य में की गयी। जो आजाद भारत ने भारतीय संविधान व्दारा सभी भारतीय नागरिकों के लिए जनता के प्रतिनिधि के रूप में जनता द्वारा जनता के लिएं स्वीकार करते हुए संवैधानिक मूल्यों को क्रियान्वित करने की शपथ ली हैं। जो संविधान की प्रस्तावना में निहित है। स्वातंत्र, समता,

न्याय, बन्धुता, और मानव धर्म जो भारतीय नागरिक को जीवन जीने का सहज, सरल, मार्ग के रूप में पहचाना जाता है। जिस के लिए आज भी मानव को संघर्ष करना पड रहा है। यही मानव जीवन की त्रासदी आधुनिक हिन्दी दलित साहित्य में दर्शायी है, मानव मूल्य ही तो है जिसकी आस आज भी की जा रही है।

धर्म, संस्कृति

धर्म वं संस्कृति मानव मूल्य की स्थापना करने में महत्वपूर्ण भुमिका अदा करती है। संसार का हर मानव किसी ना किसी धर्म और संस्कृति को मानता हैं। साहित्य में सभी धर्मो का चित्रण है। ईदगाह कहानी में मुस्लिम धर्म और संस्कृति का चित्रण है कफन कहानी में हिन्दू धर्म का चित्रण है उसने कहा था कहानी में सिख धर्म का। प्रेमचंद के कथा साहित्य में अधिकतर सभी धर्मो का चित्रण हुआ है। इस प्रकार आधुनिक हिन्दी साहित्य में सभी धर्म व संस्कृति का चित्रण किया गया है। क्योंकि धर्म एवं संस्कृति मानव स्वभाव, बुद्धि और कर्म का मिला जूला संस्कार, मानव प्रवृत्ति है। जिसका सीधा संबंध मानव जीवन मूल्यों से है। इसके अंतर्गत मानव की समस्त सृजनात्मक, कलात्मक, आर्थिक तथा सामाजिक उपलब्धियों आदि का समावेश होता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में सभी धर्मो का चित्रण है।

इतिहास

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नाटककार के रूप में जयशंकर प्रसाद का नाम है। जिनके नाटकों की कथा एतिहासिक है लेकिन उनमें मानव मूल्यों की आज की आवश्यकताएं है। उसी प्रकार के नाटककार मोहन राकेश है। साथ ही ''एक और द्रोणाचार्य'' शंकर शेष द्वारा लिखित नाटक में शिक्षा क्षेत्र का वास्तविक चित्रण करते हुए युवा वर्ग की परिस्थितियां व संघर्ष को दर्शाया गया है। क्योंकि साहित्य में चित्रित इतिहास समय से बंदिस्त नहीं होता वह मानव को वर्तमान में कार्य करने के लिए प्रवृत्त करता है। साहित्य में पात्रों द्वारा अनेक मनोभाव, अर्न्तद्वंन्द, दिशा, निर्देश एवं सूप्त संदेश छूपे होते हैं। नाटक इतिहास को नविन संदर्भ में प्रस्तुत करकें वर्तमान विसंगतियॉं, विडबनाएं, मानव समाजगत नये संस्कार, माानव–संबंधों का सर्वांगिण चित्रण करते है।। नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी वर्तमान समस्यामूलक और मानव संबंधों से जूडे होते है।

सद्सदविवेक बुद्धि

मानविय मूल्यों की स्थापना साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय संस्कृति में साहित्य पठन–पाठन, क्रियान्वयन से सद्सदविवेक बुद्धि जागृत, तरबेज और विकसित करने का प्रयास साहित्यकार करते है। जैसे कवि शिवमंगलसिंह 'सुमन' की सैनिक का पत्र कविता में सैनिक युद्धभूमि से अपने देशवासियों को जो पत्र लिखता है उसमें एक सिपाही, परिवार का मुखिया, विधवा मां का पुत्र, पती, गांव का नागरिक इत्यादि द्वारा जो सद्सदविवेक बुद्धी, तन–मन–धन–आचरण की जागृति, कर्तव्य भावना चाहिए वह कवि ने दर्शाने का प्रयास किया है। जो एक भारतीय नागरिक के मानव मूल्य ही है। मानव में अच्छा बूरा सोचने समझने की शक्ति का विकास हो इसी आशा से मानव मूल्यों का चित्रण आधुनिक हिन्दी साहित्य में यत्रं–तत्रं हुआ है।

मानविय नैतिक मूल्य

मानव जीवनयापन करते वक्त एक दूसरे नैतिक मूल्य की, व्यवहार की अपेक्षा करता है। जिसमें संवेदनशीलता, राग–विराग वृत्ति, मानविय सक्षमता, दूर्बलताएॅं, सष्णिुता, दया, क्षमा, शांति, अहिंसा, एक–दूसरें से सुख–दु:ख में सहकार्य, मान–संम्माान, मर्यादा की रक्षा करना आदि कहा जा सकता है। मानव की राग–विराग आदि वृत्तियों की अभिव्यक्ति आधुनिक हिन्दी साहित्य में बखुबी दर्शायी

गयी है। जिससे मानव दूसरों के दु:ख में दु:ख और दूसरों के सुख में सुख का बोध, अहसास प्राप्त करता है। यह सर्वांगिण बोध और अहसास ही तो साहित्य में मानव मूल्य है। जिससे वह स्वयं को साहित्य में देखता है और अपना सुधार व विकास करने का निरंतर प्रयास करते रहता है।

निष्कर्ष

आधुनिक हिन्दी साहित्य में मानव मूल्यों का चित्रण, विश्लेषण मानव सभ्यता की विशेष उपलब्धि है। जिसका पूनर्मूल्यांकन जीवन सुधार में, विकास में अपना अमूल्य सहभाग दर्शाता है। बिता हुआ कल, वर्तमान और भविष्य जो आदर्श, अनुकरणीय, सर्वमान्य, सर्वोपयोगी भी हो। जिसका चित्रण आधुनिक हिन्दी साहित्य में किया गया है और किया जाना चाहिए ऐसी हम सब नागरिकों की मनिषा है। लेकिन हम देखते है, कि जिसे हमने उपरोक्त नुसार मानव मूल्यों के रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया है उसकी किमत वास्तविक समाज व्यवस्था, व्यवहार, भौतिक जगत में क्या सबको है? क्या सभी अपने जीवन में इसे स्वीकार करते है? प्रेमचंद की कहानी कफन के पात्र माधव और घिसू जैसों को इन तथाकथित मानव मूल्यों की क्या सच में आवश्यकता है? है भी और नहीं भी दोनों उत्तर हो सकते है। अगर हॉ तो जिसका पेट भरा हो उसके लिए भी है और जो भूखा है उसके लिए भी है। लेकिन मानव मूल्यों के पहले उसें पेट की भूख प्यारी है। अर्थात जिसका पेट भरा है उसको मानव मूल्यों की प्रथम आवश्यकता है और जो भूखा है उसकी दूययम आवश्यकता है। साहित्य में ऐसे लोगों के लिए भी लेखन होना चाहिए जो भूखा है और उसके लिए भी जिसका पेट अधिक भरा है उसके लिए भी क्योंकि सबकी नजर में मानविय मूल्यों का समान महत्व है और होना चाहिए। इसका लेखन कब, कहा, क्यूँ, कैसे, किसलिए हो आदि का क्रियान्वयन साहित्यकारों पर निर्भर है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में मानव मूल्यों का सृजन, पालण, संरंक्षण व विकास मानव हित मे हिन्दी साहित्यकार अवश्य करतें रहेगें इसी दृढ विश्वास के साथ।

संदर्भ :

भाषा भारती का १२ वां अंक लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी–२४८१७९ संपादक रमा वर्मा मुद्रक प्रिन्ट विजन ४१–सी, राजपुर रोड, देहरादून आलेख–मानव मूल्य–लेखक डॉ. मदनमोहन 'तरूण' पृष्ठ क्रमांक ११

गोदान–लेखक प्रेमचंद–विश्वभारती प्रकाशन, सीताबर्डी नागपुर–१२ नया संस्करण २०१३ पृष्ट ६,७

हिन्दी काव्य सरिता–सम्पादक–निर्मला गुप्ता–प्रकाशक यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस ;प्रा.द्ध लि.रामनगर नई दिल्ली–११००५५ पुन:मुद्रित : १९९० पृष्ठ क्रं. (xiv)

प्रेमचंद और उनका युग–लेखक रामविलास शर्मा–राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.१–बी,नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली–११०००२ पृष्ट क्रंमांक ३१